स्वयं सहायता समूहों से मिलने वाले सबक

पिछले कई दशकों से कार्यरत स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण वित्त की तस्वीर बदल दी है। उसने यह सिद्ध किया कि अनौपचारिक लेन-देन की अच्छी बातों को समझकर और अलग सोच के साथ यदि उसे व्यवस्थित रूप दिया जाए, तो एक सफल वित्तीय व्यवस्था बनाई जा सकती है। लेकिन एक नीतिगत सवाल यह है कि हमें इसे स्वाभाविक रूप से बढ़ने देना चाहिए या बाहरी सहारा भी देना चाहिए?

स्वयं सहायता समूह बनाने के उद्देश्य -

• इसका उद्देश्य महिलाओं को छोटे-छोटे बचत के लिए प्रोत्साहित करना था। इसमें इस बात की भी चुनौती थी कि परिवार का मुखिया गरीबी दूर करने वाली योजनाओं के केन्द्र में होना चाहिए।

• महिलाएं अपनी बचत साप्ताहिक या मासिक समयांतराल पर निश्चित दिन पर आकर जमा करती, जिस पर कोई ब्याज नहीं मिलता। महिलाएं बस अपनी बचत सुरक्षित हाथों में रखना चाहती थी।

• जमा धन में से ही किसी जरूरतमंद को ऋण दिया जाता, जिस पर ब्याज भी लगता और यह ब्याज की दर स्थानीय अनौपचारिक ऋण की दर के आसपास ही रखी जाती, ऋण की दर तथा अन्य चीजों को महिलाओं को स्थानीय भाषा में समझाया जाता।

• स्वयं सहायता समूह अब बैंक की तरह काम करने लगे। समूह में जमा अतिरिक्त राशि को सदस्यों के बीच उपहार में दिया जाता।

• समूह का मूल उद्देश्य बचत था, जिसे आधार बनाकर इसे औपचारिक वित्तीय व्यवस्था से जोड़ना चाहिए था। लेकिन इसे जोड़ा गया गरीबी दूर करने और आजीविका को आधार बनाकर। इनको खूब पैसा दिया गया, ताकि सदस्यों को कम दर पर ऋण मिल सके। अब समूहों के पास निष्क्रिय नकदी पड़ी रहती है, तथा सदस्य ऋण भी नहीं ले पा रहे हैं।

हम भविष्य के लिए क्या कर सकते हैं?

• बैंक समूह के बचतकर्ताओं और ऋण लेने वालों को एक साथ संगठित कर सकते हैं। इससे बैंक अपनी पूरी वित्तीय व्यवस्था में समूहों की सामूहिक ताकत और कम लागत वाली पहुंच का फायदा उठा सकते हैं।

• जिस तरह सूक्ष्म ऋण दाताओं ने अनौपचारिक वित्तीय व्यवस्था से सीखा, वैसे ही हमें सीखने की जरूरत है। ग्राहक वित्त संबंधी बातों को ठीक से नहीं समझते, यह संरक्षणवादी सोच है। उनके लिए अपने खाते में बढ़े हुए पैसों से ज्यादा उन पैसों को जो जमा हैं, उन्हें जमा करने में आसानी, निकालने में सरलता तथा सेवा उनकी कितनी पहुंच में है, यह मायने रखता है।

जैसे- आंध्रप्रदेश के अनंतपुर में स्वयं सहायता समूह द्वारा एक बीमा पॉलिसी ली गई, जिसमें मासिक प्रीमियम की सुविधा नहीं थी, क्योंकि प्रीमियम की राशि भी कम थी। स्वयं सहायता समूह द्वारा प्रीमियम को वार्षिक भरने के बराबर धन दे दिया गया, जिसे बाद में सबने मासिक अंतराल पर चुकाया।

• यदि वित्तीय सेवाओं को पहुंचाने के तरीके में थोड़ी रचनात्मकता दिखाई जाए, तो इससे छोटी-रकम और कम ग्राहक की समस्या को दूर किया जा सकता है। गरीबों के लिए केवल बचत योजनाएं ही पर्याप्त नहीं हैं। उन्हें अपने वित्त का प्रबंधन कैसे करना चाहिए, यह समझाने के साथ-साथ उनके लिए उचित वित्तीय योजना का डिजाइन तैयार किया जाना चाहिए।

*****